Printed Journal
Indexed Journal
Refereed Journal
Peer Reviewed Journal
Multidisciplinary Journal
www.allresearchjournal.com

CODEN: IJARPF
Index Copernicus
Impact Factor: RJIF 8.4
ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869

INTERNATIONAL JOURNAL OF APPLIED RESEARCH

VOLUME 7 ISSUE 1 JANUARY 2021 MONTHLY

RESEARCH JOURNALS
DELHI (INDIA)

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

International Journal of Applied Research

(ISSN Online: 2394-5869)
(Print-ISSN: 2394-7500)

Volume- 7 Issue- 1 January 2021

Published By

Research Journals

3, Pocket H-34, Sector-3, Rohini, Delhi-110085, India

Toll Free (India): 1800-1234-070

Tel: +91-9711224068

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2021; 7(1): 121-124
www.allresearchjournal.com
Received: 30-10-2020
Accepted: 28-12-2020

कुँवर कुलदीप चौहान
शोध छात्र, शिक्षाशास्त्र विभाग, बाबा साहेबभीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय), लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

डॉ. हरिशंकर सिंह
उपाचार्य, शिक्षाशास्त्र विभाग, बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय), लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
कुँवर कुलदीप चौहान
शोध छात्र, शिक्षाशास्त्र विभाग, बाबा साहेबभीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय), लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

बी० एड० एवं बी० पी० एड० छात्रों के शैक्षिक व सामाजिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

कुँवर कुलदीप चौहान, डॉ. हरिशंकर सिंह

सारांश
अनुकूलन की क्षमता ही जीवों को विशेष परिस्थितियों में जीवित रखती है। परिवेश के मुताबिक कुछ ऐसे गुण विकसित हो जातें हैं, जिनके द्वारा वह उस परिवेश में आसानी से समायोजित हो जाता है। समायोजन एक सूक्ष्म अवधारणा न होकर, एक व्यापक अवधारणा है, जिनमें भौतिक विशेषताओं के साथ–साथ आंतरिक विशेषताएं भी अंतर्निहित होतीं हैं, जो व्यक्ति के रहने, दूसरों से अंतक्रिया आदि को बेहद सूक्ष्मता से प्रभावित करती है। समायोजन जीवन पर्यत चलने वाली एक प्रक्रिया है, जो व्यक्ति को वातावरण की विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति और उनके साथ तालमेल स्थापित करने में मदद करती है। एक सामाजिक प्राणी के रूप में हम समाज में रहतें हैं और समाज के दूसरे सदस्यों से अपनी पहचान बनाने और समाज के मानकों के अनुसार व्यवहार करने की कोशिस करतें हैं, जिससे हम दूसरों के साथ समायोजन करने में सक्षम हो सकें। प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी समाज का नागरिक या सदस्य होता है और उसके विकास से उस समाज का विकास होता है, अतः प्रत्येक समाज अपने नागरिकों के व्यक्तिगत जीवन के बहुमुखी विकास की व्यवस्था शिक्षा के माध्यम से करता है। अतः परिवार, समाज, विद्यालय को एक नया आयाम प्रदान करने के लिए यह अध्ययन अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

मुख्य शब्दः शैक्षिक, सामाजिक समायोजन

प्रस्तावना

मनुष्य एक समाजिक प्राणी हैं, वह समाज से अलग रहकर अपना विकास नहीं कर सकता। अतः समाज का सम्बन्ध केवल लोगों के समूह के साथ नहीं, बल्कि उनके बीच होने वाले अन्तरसम्बन्धों से भी है। समाज में रहने के लिए मनुष्य को अपने व्यवहार और अपने आप को समाज में समायोजित करना पड़ता है। हालांकि व्यक्ति का विभिन्न परिस्थितियों के बीच समायोजन कर लेना व्यक्तित्व का प्रमुख लक्षण है। क्रिया और व्यवहार में परिवर्तन कर प्रत्येक परिस्थितियों में अपने आप को ढाल लेने की क्षमता, अच्छे व्यक्तित्व की परिचायक है। समायोजनशीलता के कारण ही व्यक्ति बहुत से आंतरिक द्वंद्वों से मुक्ति पाने में सफल हो जाता है एवं विभिन्न परिस्थितियों में अपनी बुद्धि का प्रयोग सफलतापूर्वक करके वास्तविकता को समझते हुए, उसी के अनुरूप व्यवहार व आचरण करना सीख जाता है, जो एक संतुलित व्यक्तित्व का लक्षण है। ऐसा व्यक्ति ही अपने वातावरण के साथ समायोजन कर सुख का अनुभव कर पाता है। यह सब शिक्षा द्वारा ही संभव हो पाता है, क्योंकि शिक्षा ही वह माध्यम है, जो व्यक्ति और पशु में अंतर करता है। शिक्षा वह प्रकाश रूपी पौधा है, जिसको पाकर व्यक्ति खिल उठता है और देखा जाए तो शिक्षा ही व्यक्ति में नैतिक मूल्यों का विकास करके, उसको समाज में समायोजित करने में मदद प्रदान करता है।

शिक्षा मानव की अंतर्निहित क्षमता और उसके व्यक्तित्व को विकसित करने की एक प्रक्रिया है। यही प्रक्रिया उसे समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए समाजीकृत करती है तथा एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए व्यक्ति को आवश्यक ज्ञान तथा कौशल उपलब्ध कराती है। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति, समाज, क्षेत्र, राष्ट्र एवं विश्व का विकास होता है, और इसका मुख्य उद्देश्य– समाजीकारण, सामाजिक नियंत्रण और सामाजिक परिवर्तन लाना, संस्कृतियों का संरक्षण, संवर्द्धन एवं स्थानान्तरण, मूल्यों का विकास करना, नैतिकता व चारित्रिक विकास करना होता है। समाज में प्रत्येक क्षेत्र में कार्यों को सुचारू रूप से चलाने हेतु विशेषज्ञों की आवश्यकता होती है। अतः व्यक्ति को अपनी व्यक्तित्व का विकास समाज की आवश्यकताओं तथा आदर्शों के अनुसार करना चाहिए। इसके लिए आवश्यक है कि मानव समाज को उन आदर्शों एवं मूल्यों का पाठ पढ़ाया जाए, जिसके द्वारा मनुष्य और समाज में स्नेह, सहानुभूति जैसे भाव का विकास हो, जिससे समाज में समायोजन निरंतर समरसता से परिपूर्ण रहे तथा व्यक्ति अपनी क्षमताओं का यथाशक्ति प्रयोग करता हुआ अपने

Scanned with CamScanner

लक्ष्य से विमुख ना हो। समायोजन समाज में समरसता प्रदान कर मनुष्य के जीवन को सार्थक बनाता है, इसलिए शोधकर्ता ने सामाजिक समायोजन सम्बंधित समस्या को अपने शोध कार्य के लिये चुना है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

प्रस्तुत अध्ययन का वर्तमान संदर्भ में अनेक कारणों से विशेष महत्व है, क्योंकि पारिवारिक, सामाजिक, शैक्षिक, तकनीकी, औद्योगिक, राष्ट्रीय परिवेश में जिस गति से परिवर्तन हो रहा है, उसके परिणामस्वरूप जहां एक ओर भौतिक सुख–सुविधाओं में पर्याप्त वृद्धि हो रही है, वहीं दूसरी ओर मनुष्य में सद्गुणों का अपेक्षित विकास नहीं हो पा रहा है और परिवार, समाज एवं विद्यालय में अनेक प्रकार की समस्याएं उत्पन्न हो रही है। ऐसी परिस्थिति में परिवार, समाज, विद्यालय को एक नया आयाम प्रदान करने के लिए यह अध्ययन अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। इस तरह बी0 एड0 एवं बी0 पी0 एड0 के छात्र–छात्राएं, जो भावी शिक्षक है, वह अपने स्वयं में मूल्यों के विकास के साथ ही दूसरों में मूल्यों का विकास कर सकतें हैं, अतः भावी शिक्षकों में सामाजिक समायोजन का होना अति आवश्यक है।

समस्या कथन

अध्ययन की समस्या – बी० एड० एवं बी० पी० एड० छात्रों के शैक्षिक व सामाजिक समायोजन का तुल्नात्मक अध्ययन समस्या में प्रयुक्त चरों का परिभाषीकरण

प्रस्तुत शोधपत्र में बी० एड० एवं बी० पी० एड० स्तर के प्रशिक्षणार्थियों से तात्पर्य उन छात्र एवं छात्राओं से है, जो छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर संबद्ध महाविद्यालयों में अध्ययनरत हैं।

सामाजिक समायोजन

समायोजन परिस्थितियों को अनुकूल बनाने की वह प्रक्रिया है, जिस में मनुष्य की आवश्यकताएं तो पूरी हो जाए, परंतु उसे कोई कुंठा तनाव या मानसिक द्वंद उत्पन्न न होने पाए। जब व्यक्ति अपने लक्ष्य की प्राप्ति सरलता से कर लेता है, तो उसे संतोष का अनुभव होता है, परंतु जब लक्ष्य प्राप्त करने में उसे बाधाओं का सामना करना पड़ता है, तो उसे अप्रिय अनुभूति होती है। यदि वह इन बाधाओं को सही ढंग से दूर करने में सफल रहता है, तब उसका समाज के साथ समायोजन हो जाता है। सामाजिक प्राणी होने के कारण बालक के समायोजन पर समाज का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक ही है। सामाजिक वातावरण या सामाजिक संगठन के दोषपूर्ण होने पर बालकों की समायोजन क्षमता पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। अतः समाज, परिवार, विद्यालय, छात्रों के समायोजन को सही गति व दिशा दे सकतें हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

1. स्नातक स्तर के बी० एड० छात्रों के सामाजिक समायोजन का अध्ययन करना।
2. स्नातक स्तर के बी० पी0 एड० छात्रों के सामाजिक समायोजन का अध्ययन करना।
3. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत बी0 एड0 एवं बी० पी० एड० छात्रों के सामाजिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना

शोध परिकल्पना

1. बी० एड० छात्रों के मध्य सामाजिक समायोजन के स्तर में अन्तर होता है।
2. बी० पी० एड० छात्रों के मध्य सामाजिक समायोजन के स्तर में अन्तर होता है।
3. बी० एड० एवं बी० पी० एड० छात्रों के मध्य सामाजिक समायोजन में सार्थक अन्तर होता है।

अध्ययन की परिसीमायें

- प्रस्तुत अध्ययन कार्य में स्नातक स्तर पर अध्ययनरत बी0 एड0 एवं बी0 पी0 एड0 द्वितीय वर्ष छात्रों तक सीमित है।
- प्रस्तुत अध्ययन कार्य में कानपुर जनपद में अध्ययनरत छात्रों को ही सम्मिलित किया गया है।

संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण

डब्लू0 आर0 बोर्ग ने लिखा है– "किसी भी क्षेत्र का साहित्य उस आधारशिला के समान है, जिस पर संपूर्ण भावी कार्य आधारित होता है। यदि संबंधित सर्वेक्षण के द्वारा उस नीव को सुदृढ नहीं कर लेते, तो हमारे कार्य के प्रभावहीन एवं महत्वाकांक्षी होने की संभावना है अथवा पुनरावृति भी हो सकती है।"

पटेल और अन्य (1977), ने अपने निष्कर्ष में पाया कि पारिवारिक समायोजन के क्षेत्र में छात्राओं ने छात्रों की तुलना में उच्च अंक प्राप्त किये। व्यक्तिगत समायोजन में छात्रों ने छात्राओं की अपेक्षा अधिक अंक प्राप्त किये। तथा सामाजिक समायोजन में इन दोनों के बीच कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया।

गुप्ता लिलेश (2002), ने उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के 99 छात्रों पर भविष्य के प्रति जागरूकता व्यवसायिक रूचि एवं विद्यालय में समायोजन का अध्ययन किया। जिनमें छात्रों को उच्च, मध्य, निम्न स्तरों में बांटा गया। निष्कर्ष में पाया गया कि निम्न आय वर्ग वाले छात्रों की तुलना में उच्च आय वर्ग के छात्र अपने भविष्य के प्रति अधिक जागरूक और अधिक समायोजित है।

कुशवाह आरती (2003), ने अपने अध्ययन में पाया कि विभिन्न आय वर्ग एवं विभिन्न किशोर एवं किशोरियों के समायोजन स्तर में अन्तर पाया गया। संवेगात्मक परिपक्वता, बौद्धिक विकास एवं किशोर समायोजन में सार्थक सम्बन्ध पाया गया।

शर्मा, सुषमा (2012)[9], ने अपने अध्ययन में पाया कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर के परिवारों का बालकें के नैतिक विकास एवं नैतिक मलूयों की शिक्षा पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

गुप्ता, प्रियदर्शनी (2013), ने अपने अध्ययन में पाया कि छात्रों व छात्राओं दोनों का ही विभिन्न स्तरों पर आर्थिक, सामाजिक, सौंदर्यात्मक, राजनीतिक मूल्य व व्यक्तित्व समायोजन लगभग समान है।

बानो, नफीसा (2014)[3], ने अपने अध्ययन में पाया कि बी0एड0 स्तर के विद्यार्थियों के अभिभावक प्रोत्साहन तथा उनके नैतिक मूल्यों के मध्य उच्च धनात्मक सहसंबंध होता है। तथा संवेगात्मक परिपक्वता का बालकों के सर्वांगीण विकास एवं समाज में समायोजन पर समुचित प्रभाव पड़ता है।

यादव, बेगराज सिंह (2014), ने अपने अध्ययन में पाया कि प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं के समायोजन में लैंगिक दृष्टि से सार्थक अंतर है। प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला अध्यापिकाओं का समायोजन पुरुष अध्यापकों के समायोजन की तुलना में उच्च है।

नगुसा, ब्राक मांजले (2016), ने अपने अध्ययन में पाया कि धार्मिक शिक्षा से शिक्षार्थियों को सही और गलत के बीच भेदभाव करने की व्यावहारिक क्षमता मिलती है।

शोध प्रारूप

प्रस्तुत लघु शोध में छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर एवं संबद्ध महाविद्यालयों में बी0 एड0 एवं बी0 पी0 एड0 स्तर के छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक समायोजन के सम्बंध में

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

सूचनाएं प्राप्त करने हेतु विभिन्न उपकरणों के माध्यम से सर्वेक्षण द्वारा अध्ययन किया गया है।

जनसंख्या

प्रस्तुत शोध अध्ययन की जनसंख्या का सम्बधं कानपुर जनपद के छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय एवं संबद्ध महाविद्यालयों के बी0 एड0 एवं बी0 पी0 एड0 के सभी छात्र एवं छात्राओं से है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्यन में शोधार्थी द्वारा कानपुर जनपद के छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय एवं संबद्ध महाविद्यालयों के 100 बी0 एड0 एवं 100 बी0 पी0 एड0 छात्र एवं छात्राओं का न्यादर्श के रुप में चयन किया गया है।

शोध उपकरण

सामाजिक समायोजन मापनी

प्रस्तुत शोध में डॉ0 आर0सी0 देवा द्वारा निर्मित सामाजिक समायोजन मापनी का प्रयोग किया गया है। जिसकी विश्वसनीयता परीक्षण पुनः परीक्षण विधि से 2 महीने के उपरान्त 0.91 प्राप्त हुई। तथा उपकरण की वैधता 0.79 है।

आंकडों का विश्लेषण एवं व्याख्या

परिकल्पना 1 का परीक्षण

H0₁ बी0 एड0 छात्रों के मध्य सामाजिक समायोजन में अन्तर नहीं होता है।

सारणी 1: बी0 एड0 छात्रों के सामाजिक समायोजन का काई–वर्ग मान की गणना

सोपान (Step)	अत्यन्तनिम्न (Very low)	निम्न (Low)	सामान्य (Moderate)	उच्च (High)	अत्यन्तउच्च (Very High)	योग	मुक्तांश df)
f_o	1	12	24	40	23	100	4
f_e	3.59	23.84	45.14	23.84	3.59	100	
$f_o - f_e$	.2.59	.17.84	. 1427	13.16	31.41		
$(f_o - f_e)^2$	.17	318.26	736.58	173.18	986.59		
$\frac{(f_o - f_e)^2}{f_e}$	.04	13.35	16.32	7.26	274.81	X2 = 133.53	

उपर्युक्त सारणी संख्यां 4.1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि परिगणित ग्2 त्र 133ण्53 का मान .05 व .01 स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक न्यूनतम सारणी मान 9.488 व 13.277 से बहुत अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना को अस्वीकृत होती है। क्योंकि अवलोकित वितरण तथा प्रत्याशित वितरण के बीच अंतर संयोगवश नहीं आ सकता है, इसीलिए छात्रों के अवलोकित वितरण को प्रायिकता वितरण के अनुरूप स्वीकार नहीं किया जा सकता।

परिकल्पना 2 का परीक्षण

H02 बी0 पी0 एड0 छात्रों के मध्य सामाजिक समायोजन में अन्तर नहीं होता है।

सारणी 2: बी0 पी0 एड0 छात्रों के सामाजिक समायोजन का काई–वर्ग मान की गणना

सोपान (Step)	अत्यन्तनिम्न (Very low)	निम्न (Low)	सामान्य (Moderate)	उच्च (High)	अत्यन्तउच्च (Very high)	योग	मुक्तांश (df)
fo	2	11	38	38	11	100	4
fe	3.59	23.84	45.14	23.84	3.59	100	
fo - fe	. 1.59	.12.84	. 7.14	14.16	7.41		
(fo - fe)2	2.53	164.86	50.98	200.50	54.90		
$\frac{(f_o - f_e)^2}{f_e}$	.70	6.91	1.13	8.41	15.29	X2 = 32.44	

उपर्युक्त सारणी संख्यां 4.2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि परिगणित $X^2 = 32.44$ का मान .05 व .01 स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक न्यूनतम सारणी मान 9.488 व 13.277 से बहुत अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना को अस्वीकृत होती है। क्योंकि अवलोकित वितरण तथा प्रत्याशित वितरण के बीच अंतर संयोगवश नहीं आ सकता है, इसीलिए छात्रों के अवलोकित वितरण को प्रायिकता वितरण के अनुरूप स्वीकार नहीं किया जा सकता।

परिकल्पना 3 का परीक्षण

H03 बी0 एड0 एवं बी0 पी0 एड0 छात्रों के मध्य सामाजिक समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

सारणी 3: सामाजिक समायोजन का मध्यमान, मानक विचलन, टी–मान

क्र0 सं0	समूह	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मनकविचलन (SD)	क्रांतिकअनुपात (C.R)	मुक्तांश (df)	सार्थक स्तर
1	बी0 एड0	100	62.47	17.25	2.02	198	.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक
2	बी0 पी0 एड0	100	57.93	14.26			

उपर्युक्त सारणी संख्या 4.3 के अवलोकन से स्पष्ट है कि ज का परिकलित मान 2.02 है जो कि 198 के लिए .05 स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 1.97 से अधिक है। अतः .05 स्तर पर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। निष्कर्षता कहा जा सकता है कि बी0 एड0 एवं बी0 पी0 एड0 छात्रों के मध्य सामाजिक समायोजन में सार्थक अंतर होता है।

निष्कर्ष

निष्कर्षता कहा जा सकता है कि बी0 एड0 छात्रों के मध्य सामाजिक समायोजन का स्तर ज्ञात करने पर उनके मध्य सामाजिक समायोजन का स्तर असमान पाया गया। अतः छात्रों के वितरण को सामान्य प्रायिकता वितरण के अनुरूप स्वीकार नहीं किया जा सकता। बी0 पी0 एड0 छात्रों के मध्य सामाजिक समायोजन का स्तर ज्ञात करने पर उनके मध्य सामाजिक

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

समायोजन का स्तर असमान पाया गया है। अतः छात्रों के वितरण को सामान्य प्रायिकता वितरण के अनुरूप स्वीकार नहीं किया जा सकता। बी0 एड0 एवं बी0 पी0 एड0 छात्रों के मध्य सामाजिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करने पर पाया गया कि बी0 एड0 छात्रों का सामाजिक समायोजन स्तर बी0 पी0 एड0 छात्रों से अधिक है।

शैक्षिक निहितार्थ एवं सुझाव

किसी भी शोध कार्य का वह व्यवहारिक पक्ष, जिसके आधर पर एक तकनीकी एवं कठिन शोध उपादेयता एक सरल एवं सामाजिक उपयोगी पक्ष में परिवर्तित हो जाती है। इस प्रकार शोध कार्य न केवल उददेश्यों को परिपूर्ण करता है, वरन् जनमानस के लिये सर्वाधिक उपयोगी सिद्ध होकर अपने सामाजिक उत्तरदायित्वों को वहन करता है।

प्रत्येक शोध कार्य की कुछ सीमायें होती हैं। इसी सीमान्त में शोध संबन्धी सुझाव का उदय होता है। निश्चित शक्ति, समय एवं कार्य–प्रणाली तक विश्वस्त निष्कर्षों की प्राप्ति हेतु शोध को निश्चित ढाँचे में तैयार करने हेतु विवश करती है। फलस्वरूप शोधार्थी को अनेक करकों को नियन्त्रित करना पडता है। जिस प्रकार बगैर रोग का परीक्षण किये अनुमान के आधार पर औषधी का सेवन किया जाना लाभप्रद न होकर संकट का कारण भी बन सकता है, ठीक उसी प्रकार शिक्षा विभाग में भी नित नवीन प्रयोगों ने शिक्षा की वर्तमान हालात तक पहुँचाने में सहयोग किया है। शोधकार्य से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर इन परिस्थितियों में भी सुधार की संभावना के लिये उपयोग किया जा सकता है, यदि गम्भीरता पूर्वक संबन्धित सझावों को अमल मे लाया जाये, जो इस प्रकार है–

- शैक्षिक निर्देशन वह प्रक्रिया है जो किसी व्यक्ति को इस योग्य बनाती है कि वह अपनी सहायता स्वयं कर सके तथा शैक्षिक निर्देशन का व्यक्ति के सामाजिक समायोजन में अहम भूमिका है।
- यह शोध विद्यार्थियों के लिये भी आवश्यक है, क्योंकि आज के समय में विद्यार्थी अपने मूल्यों को भूलते जा रहे हैं और उनके लिये मूल्यों का महत्व नहीं रह गया है। ऐसी परिस्थिति में छात्रों के लिये यह अध्ययन अधिक आवश्यक है, यदि आज के विद्यार्थी में मूल्यों का अभाव है, तो कल का समाज, समाज न रह कर उसमें असमाजिकता का विकास हो जायेगा।
- प्राचार्य का महाविद्यालय में मुख्य स्थान होता है। प्राचार्य को अपने महाविद्यालय में ऐसे कार्यक्रम कराने चाहिये, जिससे शिक्षकों एवं विद्यार्थियों में सामाजिक समायोजन, मूल्यों का विकास हो सके। जिससे विद्यार्थी अपने भविष्य में आने वाली कठिनाइयों का आसानी से सामना कर सकें।
- अध्यापकों को सामाजिक समायोजन के गुणों का विकास विद्यार्थियों में करने का प्रयास करना चाहिए तथा साथ ही कक्षा में शिक्षण के दौरान शिक्षक के व्यक्तित्व की अहम भूमिका होती है। यदि अध्यापक का व्यक्तित्व सही नहीं है, तो कक्षा में शिक्षण कार्य सही ढंग से नहीं चल पायेगा। अतः एक अध्यापक में सबसे पहले स्वंय के अन्दर सामाजिक समायोजन और मूल्यों का होना अत्यंत अवश्यक है।

संदर्भ

1. अस्थाना, डॉ0 विपिन आदि शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी. आगराः अग्रवाल पब्लिकेशन. 2009.
2. बाफिला, नीमा एवं मेहता सी0 एस0 . समायोजन मापनी पर आवासीय स्थानीयता एवं लिंग का प्रभाव. इंडिया जर्नल ऑफ ह्यूमन रिलेसन 2009.
3. बानो, नफीसा. उन्नाव जनपद के बी0एड0 स्तर पर अध्ययनरत् छात्राध्यापक–छात्राध्यापिकाओं के नैतिक मूल्यों एवं अभिभावक प्रोत्साहन में सह संबंध का अध्ययन. छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर 2014.
4. गुप्त, नत्थूलाल. मूल्यपरक शिक्षा और समाज. नई दिल्लीः नमन प्रकाशन 2005.
5. गुप्ता, एस0 पी0. आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन. इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन 2016.
6. कुमार, संदीप. माध्यमिक स्तर पर छात्रों के नैतिक मूल्यों पर उनके पारिवारिक परिवेश, शैक्षिक स्तर, आर्थिक स्तर, सामाजिक स्तर तथा बालकों के प्रति दृष्टिकोण के प्रभाव का अध्ययन. बरेली 2012.
7. पचौरी, डॉ0 गिरीश. शिक्षा के सामाजिक आधार. मेरठः आर0 लाल बुक डिपो. 2008.
8. सिंह, अरूण कुमार. मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियां. दिल्लीः मोती लाल बनारसी दास. 2015.
9. शर्मा, सुषमा, राजस्थान राज्य के उच्च माध्यमिक स्तरीय शिक्षा के सदर्भ में नैतिक मूल्यों एवं सामाजिक सफलता के मध्य सहसम्बन्धों का तुलनात्मक अध्ययन. राजस्थान 2012.
10. यादव, बेगराज सिंह. प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रशिक्षित अध्यापको की शिक्षण अभिक्षमता एवं समायोजन का अध्ययन, बरेली 2014.

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner